

पुहड़चंदचरियं (फोल्डर नं. ००१३७०)

| | |
|--|-------|
| मुख्य टाइटल | |
| प्रकाशकीय----- | ३ |
| General Editor's Foreword----- | ५-७ |
| ग्रन्थानुक्रम----- | ८ |
| प्रस्तावना----- | १-३० |
| सूचना-विशेषशुद्धिपत्रकविषया----- | ३१ |
| विषयानुक्रमः----- | ३२-४५ |
| पुहड़चंदचरियं----- | १-२२२ |
| मङ्गलमभिधेयकथनं च----- | १-२ |
| १. प्रथमः शङ्खनृप-कलावतीभवः----- | २-२९ |
| जम्बूद्वीप-भरतक्षेत्र-श्रीमङ्गलदेश-शङ्खपुरनगर-शङ्खनृपादीनां वर्णनम्----- | २-४ |
| आस्थानस्थशङ्खनृपाग्रे देशान्तरागतस्वनगरवास्तव्यदत्ताभिधानवणिकपुत्रस्यागमनम्...----- | ४-५ |
| शङ्खनृपाग्रे दत्तकृतं प्रवासवर्णनम्----- | ५-७ |
| शङ्खनृपसभासभ्यकृतः कलावतीलाभप्रत्यः वाग्विनोदः----- | ७-८ |
| निजभगिनीकलावतीपरिणायनार्थं कलावतीसहितस्य...----- | ८-९ |
| जयसेनकुमार-तदमात्य-शङ्खनृपाणां मिथ औचित्यनिवेदको वार्तालापः----- | ९-११ |
| शङ्खनृप-कलावत्योर्विवाहः, जयसेनस्य स्वनगरगमनं च----- | ११ |
| निजभ्रातृजयसेनकुमारप्रेषिताङ्गदयुगलाद्यवलोकनसञ्जातहर्षोल्लासायाः...----- | १२-१३ |
| शङ्खनृपादिष्टचाण्डालनारीकृतभुजायुगलायाः...----- | १३-१५ |
| जातसद्भावस्य शङ्खनृपस्य पश्चात्तापपुरस्सरं परिदेवनम्...----- | १५-२३ |
| शङ्खनृप-कलावत्योः पुनर्मिलनम्----- | २४-२५ |
| शील-देव-गुरुस्वरूपप्ररूपिका अमितगत्याचार्याधर्मदेशना----- | २५-२६ |
| कलावतीसहितस्य शङ्खराजस्य स्वनगरप्रवेशः----- | २७ |
| अमितगत्याचार्यधर्मदेशनाभावितस्य...----- | २८-२९ |
| २. द्वितीयः कमलसेन-गुणसेनाभवः----- | ३०-५१ |
| देवलोकाच्च्युतस्य शङ्खनृपजीवदेवस्य पोतनपुराधिपशत्रुञ्जयनृप...----- | ३०-३१ |
| उद्यानगतस्य कमलसेनस्य देवकुलिकाप्विष्टकृतनारीरूपयक्षरुदनश्रवणानुसारसाहाय्यार्थं----- | ३१-३२ |
| सह-स्नानानन्तरं बहिर्निर्गतं कमलसेनं प्रति राजपुरुषकृतं निमन्त्रणम्----- | ३४-५४ |
| देवलोकच्युतकलावतीजीवस्य गुणसेनात्वेनोत्पत्तिपरिचयः,----- | ५५ |
| युद्धोपस्थिस्य प्रद्विष्टवत्साधिपतिसमरसिंहस्य कमलसेनकृतः...----- | ५५-५६ |
| निजपितृशत्रुञ्जयप्रेषितदूतकथनश्रवणानन्तरं...----- | ५७ |
| शत्रुञ्जयनृपस्य प्रव्रज्याग्रहणं मोक्षगमनं च----- | ५८ |
| वर्षावर्णनं नदीपूरवर्णनं च----- | ५८-५९ |

| | |
|--|---------|
| ३. तृतीयो देवसिंह-कनकसुन्दरीभवः ----- | ६०-८० |
| अपुत्रत्वचिन्ताग्रस्तमुक्तावलीराज्ञीप्रेरणानन्तरश्मशानगतमेघनृपसत्त्वावर्जित... ----- | ६०-६१ |
| देवलोकच्युतगुणसेनाजीवस्य... ----- | ६१ |
| विषयपराङ्मुख्याः कनकसुन्दर्याः पुरतः... ----- | ६३-७८ |
| कनकसुन्दरीसहितस्य देवसिंहकुमारस्य स्वनगरागमनम्... ----- | ७८-७९ |
| श्राद्धधर्मरतयोः समर्पितनिजपुत्रनरसिंहकुमार... ----- | ८० |
| ४. चतुर्थो देवरथ-रत्नावलीभवः ----- | ८१-१०२ |
| देवसिंहजीवस्य देवलोकच्यवनानन्तरं... ----- | ८१-८२ |
| देवलोकच्युतकनकसुन्दरीजीवस्य सुप्रतिष्ठपुराधिपरवितेजोनृप... ----- | ८२ |
| जनकादेशानुसारं देवरथस्य सुप्रतिष्ठपुरं प्रति प्रस्थानम् ----- | ८२-८४ |
| स्वयंवरमण्डपवर्णनम् ।.... ----- | ८४-८५ |
| गान्धर्विकवरणक्षुब्धैर्युद्धायोपस्थितै राजपुत्रैः----- | ८६-८७ |
| नमस्कारमन्त्रमाहात्म्यविषयायां धर्मवस्वाचार्यदेशनायाम्... ----- | ८८-१०२ |
| धर्मस्वाचार्यदेशनाप्रतिबुद्धस्य देवरथपितुर्विमलकीर्तेः प्रव्रज्याग्रहण् ।... ----- | १०२ |
| ५. पञ्चमः पूर्णचन्द्र-पुष्पसुन्दरीभवः----- | १०३-१२४ |
| देवलोकच्यवनानन्तरं देवरथीवस्य... ----- | १०३-१०४ |
| देवलोकच्युतस्य रत्नावलीजीवस्य पूर्णचन्द्रमातुलपुत्रीत्वेन जन्म... ----- | १०४ |
| उद्यानवर्तिमाधवीलतामण्डपस्थिताया... ----- | १०४-१०६ |
| पूर्णचन्द्र-पुष्पसुन्दर्योर्विवाहः । लग्नोत्सववर्णनम् ----- | १०७ |
| धर्माचरणोपदेशात्मिका सुरसुन्दरमुनिदेशना ----- | १०८ |
| वैराग्यकारणजिज्ञासपूर्णचन्द्रविसुरसुन्दरमुनिकथितात्मकथा ----- | १०९-१२३ |
| सुरसुन्दरमुनिदेशनाप्रतिबुद्धस्य पूर्णचन्द्रपितुः... ----- | १२३ |
| पुत्रदत्तराज्यस्य चारित्र्यग्रहणपरिणामस्य पूर्णचन्द्रस्यातिसाररोगोद्भवः----- | १२४ |
| ६. षष्ठः सूरसेन-मुक्तावलीभवः----- | १२५-१३७ |
| मिथिलाधिपनरसिंहनृपस्यापुत्रत्वनिरासार्थं मन्त्रिभिर्मन्त्रणा... ----- | १२५-१२७ |
| पूर्णचन्द्रजीवस्य देवलोकच्यवनानन्तरं... ----- | १२७-१२८ |
| गुणमालायाः कटकसहितविहरणदोहदपूरणार्थं... ----- | १२८ |
| गुणमालागर्भावतरतिदेवलोकच्युतपूर्मचन्द्रजीवस्य जन्म, ----- | १२९ |
| सूरसेन-मुक्तावल्योः प्रहेलिकाविनोदः ----- | १३० |
| वृद्धावस्थाजन्यदेहावयविपर्यासजनितनिर्वेदवशोल्लसितशुभपरिणामस्य... ----- | १३१ |
| सूरसेन-मुक्तावल्योश्चन्द्रसेननामकपुत्रस्य जन्म... ----- | १३२-१३३ |
| उत्पन्नकेवलज्ञानेश्वरमुनिवन्दनार्थं सपरिवारस्य सूरसेननृपस्य गमनम् ----- | १३३ |
| वन्दनागतिव्यदेवपुरुषपरिचयजिज्ञासोः सूरसेनस्याग्रे... ----- | १३३-१३६ |
| ईश्वरमुनिदेशनाप्रभावविरक्तस्य मुक्तावलीसहित्य... ----- | १३६-१३७ |
| ७. सप्तमः पद्मोत्तर-हरिवेगभवः ----- | १३८-१५४ |

| | |
|---|---------|
| देवलोकच्युतस्य सूरसेनजीवस्य गर्जनकपुराधिसुरपतिनृप-शचीराज्योः... | १३८-१४० |
| देवलोकच्युतस्य मुक्तावलीजीवस्य... | १४० |
| शशिलेखा-सूरलेखाभिधान... | १४० |
| मथुरां गच्छतः पद्मोत्तरस्य मार्गं... | १४१-१४४ |
| मथुरागतस्य पद्मोत्तरकुमारस्य.... | १४४-१४६ |
| गगनवल्लभनगराधिपविद्याधरराजकनककेतुदुहितोः... | १४७ |
| कृतमार्जारक्रायकरूपस्य महाकायमार्जारसमन्वितस्य... | १४७-१५० |
| देवलोकसुखश्रवणजातजातिस्मरणस्य | १५० |
| गुणसागरकेवलयागमनम् ।... | १५०-१५१ |
| पद्मोत्तर-हरिवेगयोगृहस्थोचितधर्मकृत्यवर्णना... | १५२ |
| उत्तमर्णधूतकारताड्यमानस्य... | १५२-१५३ |
| रत्नाकरमुनेः समागमनम्, धर्मदेशना च... | १५३-१५४ |
| ८. अष्टमो गिरिसुन्दर-रत्नसारभवः | १५५-१७१ |
| देवलोकच्युतस्य पद्मोत्तरजीवस्य... | १५५ |
| हरिवेगजीवस्यापि देवलोकच्यवनानन्तरं... | १५५-१५६ |
| अज्ञातस्वरूपतस्करत्रस्तनागरिकत्राणासमर्थस्य... | १५६ |
| गिरिकन्दरविनिर्गतधूमदर्शनानुगतगिरिसुन्दरकुमारसाहाय्याद्... | १५६-१५७ |
| पर्वतोपरिह्रियमाणयुवतीरुदनशब्दश्रवणसम्भाविततस्करावस्थानस्य... | १५७-१५९ |
| परावर्तितरूपस्य गिरिसुन्दरकुमारस्य स्वनगरागमनम्... | १५९-१६१ |
| देवकथितसमयावव्यनन्तरं... | १६२-१६४ |
| पित्रादिसमक्षं गिरिसुन्दरस्य दण्डपालतस्करवृत्तान्तकथनम् | १६४ |
| वृत्तिगवेषणार्थं काञ्चनपुरप्रस्थितयोर्विन्ध्य-शबराभिधानयमार्गं... | १६५-१६७ |
| सुलक्षणापहाकरविद्याधरस्य प्रव्रज्याग्रहणं... | १६८ |
| गिरिसुन्दर-रत्नसारौ राज-युवराजपदे नियोज्य... | १६८ |
| कल्पवृक्षदर्शनस्वप्नावलोकनप्रतिबुद्धस्य गिरिसुन्दरस्य... | १६९ |
| संसारसुखक्षभङ्गुरत्वोपदेशात्मिका मुनेर्धर्मदेशना... | १७०-१७१ |
| ९. नवमः कनकध्वज-जयसुन्दरभवः | १७२-१८८ |
| गिरिसुन्दरजीवदेवस्य रत्नसारजीवदेवस्य च... | १७२-१७३ |
| कनकध्वज-जयसुन्दरकृतराधावेधविज्ञानप्रकर्षपरितकुष्ठाभ्यां... | १७३ |
| सुरवेग-सूरवेगविद्याधरनृपयोः... | १७३ |
| कनकध्वजकुमारस्य सुरवेगकन्याशतेन | १७४ |
| निजपुत्रयुगलपुण्यप्रभावप्रभावितस्य... | १७४ |
| तामलिस्युद्याने कायोत्सर्गस्थितमुनेः | १७५ |
| कनकध्वजकुमारस्य राज्याभिषेकः, सुमङ्गलनृपस्य प्रव्रज्याग्रहणं च | १७६ |
| देशयात्रा-तीर्थयात्रार्थं सभातृपरिवारस्य... | १७६-१७७ |

| | |
|---|---------|
| साकेतपुराधिपपुरुषोत्तमनृपामन्त्रितस्य... | १७७ |
| कनकध्वजराजस्य पुरुषोत्तमनृप... | १७७-१७८ |
| कपिञ्जलपुरोहिताज्ञानकारणमुद्दिश्याचार्यस्य... | १७८-१८६ |
| प्रदत्तपुरुषचन्द्रकुमारराज्यस्य पुरुषोत्तमनृपस्य प्रव्रज्याग्रहणम्... | १८७-१८८ |
| १०. दशमः कुसुमायुध-कुसुमकेतुभवः | १८९-२०५ |
| देवलोकच्युतस्य कनकध्वजजीवस्य... | १८९-१९१ |
| प्रमदवनस्थितनृपरूपाकर्षितव्यन्तरीकृतं गुर्विण्याः... | १९१ |
| कृतप्रियमतीराज्ञीस्वरूपव्यन्तरीहावभावकलनानन्तरं जयनृपकृतौ... | १९१ |
| जयनृपस्य प्रियमतीविरहपरिदेवनम् | १९२ |
| अरण्यमुक्ताया विलपन्त्याः प्रियमतेस्तापसीभिराश्रमनयनम्... | १९२-१९३ |
| श्रीपुरनगरोद्यानस्थजिनमन्दिरवन्दनानन्तरं... | १९३ |
| चम्पापुरीं गच्छता वासवदत्तसार्थवाहेन समं... | १९४ |
| बालराजराज्यं विज्ञाय तद् ग्रहीतुमनसा... | १९४-१९५ |
| चम्पागतस्य वासवदत्तसार्थवाहस्य... | १९५ |
| परिज्ञातवृत्तान्तस्यावन्तीपतिराजशेखरस्य... | १९५ |
| सहस्राम्रवणस्थितं केवलज्ञानिनमवगम्य जयनृपादीनां वन्दनार्थं गमनम्...। | १९५-१९८ |
| धर्मदेशनाश्रवणविरक्तानां... | १९९ |
| देवलोकच्युतस्य जयसुन्दरजीवस्य कुसुमायुधराज्याः... | १९९ |
| मथुराधिपमहाकीर्ति-साकेताधिपरविषेण-.... | २००-२०१ |
| उद्यानसमागतसरसुन्दराचार्यधर्मदेशनाश्रवणोत्पन्नवैराग्यस्य... | २०२ |
| कुसुमायुध-कुसुमकेतुनिर्गन्थयोर्गुरुसकाशाद्... | २०३ |
| एकाकिविहरतः कुसुमायुधमुनेः... | २०३-२०४ |
| उत्पन्नकेवलज्ञानसुन्दराचार्यसकाशात्... | २०४-२०५ |
| ११. एकादशः पृथ्वीचन्द्र-गुणसागरभवः | २०६-२२१ |
| देवलोकच्युतस्य कुसुमायुधजीव... | २०६-२०८ |
| पृथ्वीचन्द्रकुमारविरक्तिनिरासार्थं... | २०८ |
| पृथ्वीचन्द्रस्य वैराग्यभावना... | २०८-२११ |
| पृथ्वीचन्द्रकृतं केशवबटुकमौख्येण समं... | २११-२१२ |
| परिज्ञातपृथ्वीचन्द्रोपदिष्टषोडशभार्याविरक्तभावेन... | २१२-२१३ |
| पृथ्वीचन्द्रपुरतः सुधनवणिक्कथितो... | २१४-२१८ |
| सौधर्मेन्द्रप्रदत्तद्रव्यलिङ्गस्य... | २१९ |
| पृथ्वीचन्द्रकेवलिधर्मदेशनायां... | २१९-२२० |
| युष्माकमुपर्यावयोरेवंविधः स्नेहः कथम्... | २२१ |
| ग्रन्थकारस्य कविधर्मनिरूपणम् | २२१ |
| ग्रन्थकारस्य प्रशस्तिः | २२१-२२२ |

परिशिष्ट

| | |
|---|---------|
| प्रथमं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतानां विशेषनाम्नामकारादिक्रमेणानुक्रमः ----- | २२५-२३० |
| द्वितीयं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतानां विशेषनाम्नां विभागशोनुक्रमः ----- | २३१-२३४ |
| तृतीयं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतापभ्रंशभाषानिबद्धपद्यानां सविषयस्थलनिर्देशः ----- | २३५ |
| चतुर्थं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतस्तुति-वन्दनानां स्थलनिर्देशः ----- | २३५ |
| पञ्चमं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतानां वर्णकानामकारादिक्रमेणानुक्रमः ----- | २३५ |
| षष्ठं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतसुभाषितपद्यानामकारादिक्रमेणानुक्रमः ----- | २३६-२४१ |
| सप्तमं परिशिष्टम् – पृथ्वीचन्द्रचरितान्तर्गतानां सूक्तिरूपाणां गद्य-पद्यांशानामनुक्रमः ----- | २४२-२५० |
| अनुपूर्ति – पुहङ्गचंदचरियं अन्तर्गतविशिष्टशब्दानां सूचिः----- | २५१ |